द्वितीय अध्याय

हिंदी भाषा की संरचना।

द्वितीय अध्याय

हिंदी भाषा की संरचना

२.१ कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं की दृष्टि से हिंदी भाषा की संरचना-

भाषा अर्थ एवं परिभाषा-

विचारों का आदान-प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण साधन है भाषा।

१. पंतजली ने कहा है कि, "जो वाणी वर्णो में व्यक्त होती है, उसे भाषा कहते है।" १

२. भाषा वैज्ञानिक स्वीट ने कहा है कि, 'ध्वनियों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति भाषा है।' २

हिंदी भाषा -

हिंदी भाषा की व्युत्पत्ति भारोपिय भाषा परिवार या भारतीय आर्यभाषा से हुई है।

अपभ्रंश भाषाओं का कालखंड ५०० से १००० ई. तक माना जाता है। तो आम तौर पर हिंदी भाषा का उद्गम १००० ई. से ही माना जाता है।

(अ) हिंदी भाषा की संरचना -

वाक्य के गठन तथा विन्यास पक्ष को दखते हुए कहा जा सकता है कि परस्पर संबंध भाषिक इकाइयाँ जब किसी एक निश्चित क्रम और श्रृंखला में सुनियोजित होकर कथन या वाक्य का रूप धारण करती हैं। तो कथन या वाक्य का रूप धारण करने की यह प्रक्रिया संरचना कही जा सकती है। संरचना भाषिक इकाइयों का चयनीकृत सुनियोजित श्रृंखलाबद्ध रूप होता है। एक भाषा को दूसरी से अलग करनेवाला प्रधान तत्त्व संरचना ही है।

किसी भाषा की संरचना-व्यवस्था में मुख्यत: ये पक्ष समाविष्ट होते हैं। 'लिंग-व्यवस्था, वचन व्यवस्था, पुरुष व्यवस्था, कारक व्यवस्था, काल व्यवस्था, वृत्ति व्यवस्था, वाच्य व्यवस्था, अन्विति, अभिशासन, द्वितीय भाषा की संरचना शिक्षण का अर्थ है- द्वितीय भाषा की वाक्य-संरचना के उपर्युक्त पक्षों का अध्ययन किया जाता हैं।' ३

माध्यमिक पाठ्यपुस्तकों की दृष्टि से या स्तर की दृष्टि से उचित संरचना की जानकारी के बारे में डॉ. हेबाळकर, कै. डॉ. वास्कर, डॉ. श्रीमती. पुष्पा वास्कर जी, डॉ. सौ. सुलोचना देशपांडे जी ने दी है वह महत्वपूर्ण है, जिसका विवेचन उक्त अध्याय में किया है।

डॉ. हेळवाकर हिंदी (माध्यमिक) आशय पद्धति-समन्वय पाँचवीं से दसवीं तक के लिए

हिंदी भाषा संरचना

प्रारंभिक संबोध

ग्रहण शक्ति — आत्माभिव्यक्ति

सुनना पढ़ना — बोलना लिखना

बोलना

विद्यार्थी समझता है।

अनुकरण करता है।

पुस्तक पढता है।

रचना द्वारा शुद्ध भाषा में प्रकट करता है।

लिखता है।

गद्य

उपन्यास व कथात्मक अंश

कहानी

नाट्यप्रवेश

संभाषणात्मक पाठ/एकांकी

नाट्यप्रवेश

यात्रा वर्णन, दृष्यवर्णन

पत्रात्मक पाठ

संस्मरण या जीवनी/

आत्मकथा

शब्दचित्रात्मक

पद्य

प्रारंभिक बालगीत

वर्णनात्मक गीत

निसर्ग वर्णन पर

राष्ट्रभक्ति पर

वैज्ञानिक

व्याकरण

शब्दविचार (भेद)

विकारी — अविकारी

संज्ञा — लिंग, वचन, कारक

सर्वनाम

विशेषण

क्रिया

अर्थ — आज्ञार्थ, विद्यर्थ, संकेतार्थ

संबंधसूचक

क्रियाविशेषण

समुच्चयबोधक

विस्मयादिबोधक

अव्यय

तद्धित, कृदेत

वाक्य,शब्द, वर्ण

रचना

निंबंध

१. वर्णन

अ. इर्दगिर्द के वातावरण का वर्णन

ब. चित्रवर्णन

क. घटना वर्णन

ड. निकटवर्ती विषय

२. पत्र

अ. घरेलू

ब. व्यावसायिक

३. कथा

अ. ढाँचा

ब. कहावत को चरितार्थ करनेवाली

४. सारांश लेखन

५. चर्चात्मक

६. नाट्यसंवाद

७. रेखाचित्र

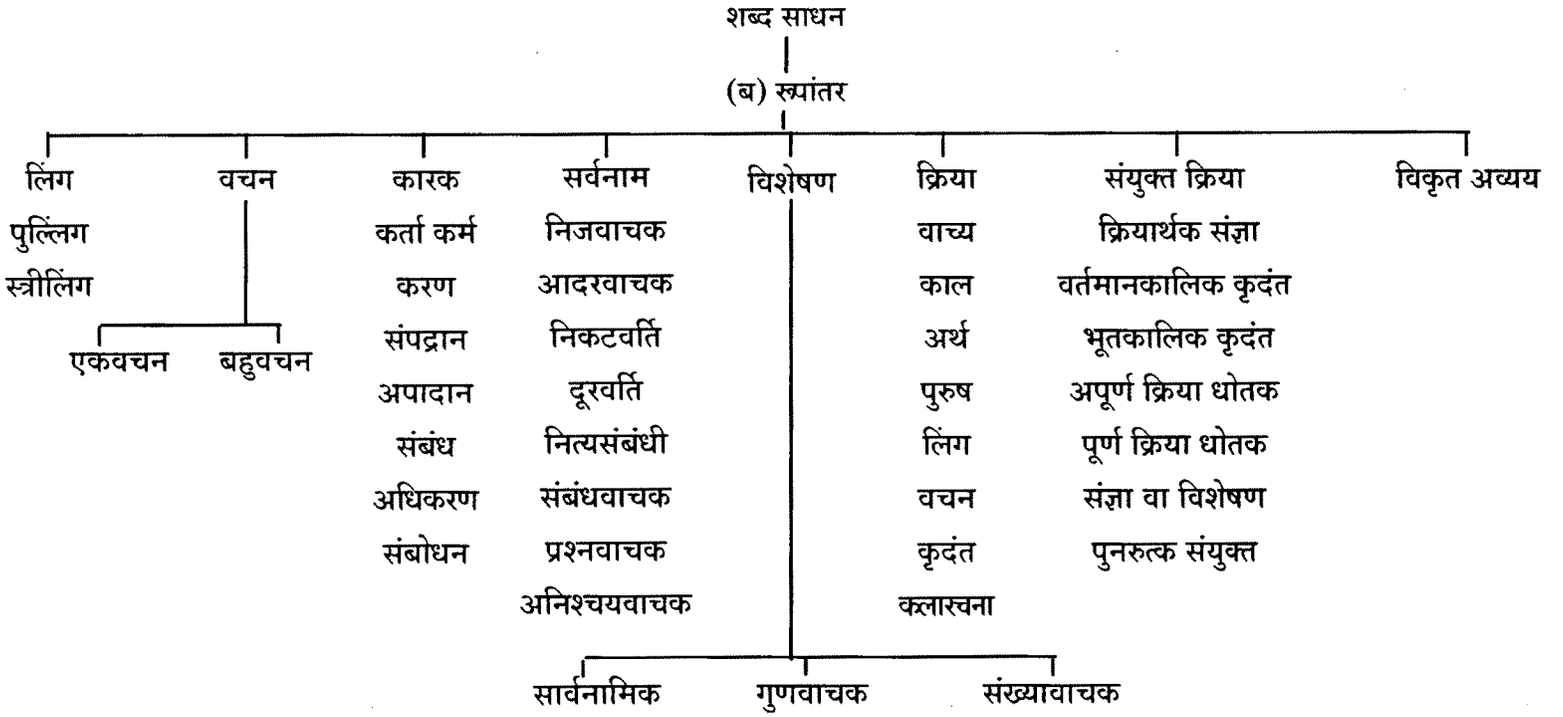
शब्द साधन
(ब) रूपांतर
लिंग
पुल्लिंग
स्त्रीलिंग
वचन
एकवचन
बहुवचन
कारक
कर्ता कर्म
करण
संपद्रान
अपादान
संबंध
अधिकरण
संबोधन
सर्वनाम
निजवाचक
आदरवाचक
निकटवर्ति
दूरवर्ति
नित्यसंबंधी
संबंधवाचक
प्रश्नवाचक
अनिश्चयवाचक
विशेषण
सार्वनामिक
गुणवाचक
संख्यावाचक
क्रिया
वाच्य
काल
अर्थ
पुरुष
लिंग
वचन
कृदंत
कलारचना
संयुक्त क्रिया
क्रियार्थक संज्ञा
वर्तमानकालिक कृदंत
भूतकालिक कृदंत
अपूर्ण क्रिया धोतक
पूर्ण क्रिया धोतक
संज्ञा वा विशेषण
पुनरुत्क संयुक्त
विकृत अव्यय

वाक्यविन्यास

- विषयारंभ
- वाक्य और उसमें भेद
  - उद्देश्य
  - विधेय
  - संयोजक
- साधारण वाक्य
  - संज्ञा
  - उद्देश्य
  - क्रियाविधेय
  - संयुक्त वाक्य समानाधिकरण
  - विभाजक
  - परिणामबोधक
  - संकुचित संयुक्तवाक्य
  - विभाजक
  - परिणामबोधक
- संयुक्त वाक्य समानाधिकरण
  - विरोधदर्शक
- मिश्रवाक्य
  - संज्ञा
  - उपवाक्य
  - क्रियाविशेषण
  - उपवाक्य
- संक्षिप्त वाक्य
- विशेष प्रकार के वाक्य
  - विधानार्थक
  - निषेधावाचक
  - आज्ञार्थक
  - प्रश्नार्थक
  - विस्मयदिबोधक
  - इच्छाबोधक
  - संदेहसूचक
  - संकेतार्थ
- विरामचिह्न
  - अल्पविराम
  - अर्धविराम
  - पूर्णविराम
  - प्रश्नचिह्न
  - आश्चर्यचिह्न
  - निर्देशक
  - कोष्टक
  - अवतरण

छंद

- मात्रिक
  - गीतिका
  - हरगीतिका
  - दोहा
  - सोरठा
  - चौपाई
  - कुंडलिया
  - छप्पय
- बर्णिक
  - इंद्रवज्रा
  - उपेंद्रवज्रा
  - वंशस्थ
  - वसंततिलका
  - भुजंगप्रयास
  - मालिनी
  - शिखरिणी
  - मंदाक्राता
  - शाईलाविक्रीडित
  - सवैया

अलंकार

- शब्दालंकार
- अर्थालंकार
  - उपमा
  - दृष्टांत
  - विरोधाभास
  - अतिरेक
  - अतिशयोक्ति
  - उत्प्रेक्षा
  - उपमेथोपमान
  - अन्योक्ति

२.२ कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों द्वारा अवगत भाषिक ज्ञान श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन, कौशल।

कक्षा नौवीं एवं दसवीं स्तर की कक्षा उत्तीर्ण छात्र भाषिक कौशलों से परिचित होने हेतु किया है। छात्रों के बौद्धिक स्तर के दृष्टि से कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं की पाठ्यपुस्तकें बनी हैं। कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं स्तर पर छात्रों का पाठ्यपुस्तकों के द्वारा श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन के बारे में जो भाषिक ज्ञान प्राप्त होता है, वह निम्न है।

२.२.१ श्रवण -

सुनने से छात्रों का भाषिक विकास शुरु होता है। भाषा सुनने से शब्दभण्डार बढ़ जाता है।

जब अध्यापक पाठ पढ़ाते है तब छात्र पाठ का सारांश तथा महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थ सुनकर समझने की कोशिश करता है। सिनेमा और रेडिओ, दूरदर्शन से प्रचलित होनेवाले हिंदी कार्यक्रम, मनोरंजन एवं ज्ञानार्जन के लिए देखने और सुनने का प्रयत्न करते है। जिससे वे हिंदी समझकर बोलने तथा समझने की कोशिश करते हैं। पाठ का आशय सुनते हैं, तो उन्हें पाठ सारांश समझ में आता है। इसलिए अध्यापकों ने स्पष्ट, शुद्ध भाषा में प्रभावात्मक ढंग से पढ़ाना चाहिए। छात्र सुनकर ही पाठ समझने की कोशिश करते हैं।

२.२.२ भाषण-

"वागिंद्रिय द्वारा ध्वनि -ध्वनियों, शब्दों, पदों, पदबंधो, वाक्यों का सामान्य रुप से बोलना तथ प्रसंगानुकूल उपयुक्त वाक्यों का प्रयोग करना भाषण कहलाता है।" ४

भाषा के परिनिष्ठित रूप में प्रवाहपूर्ण, प्रभावपूर्ण शैली में अपने भावों, विचारों को अभिव्यक्त करना भाषण है।

छात्र पाठ्यपुस्तक द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर अपने विचारों को हिंदी में अभिव्यक्त करते है और हिंदी की सभी ध्वनियों का अलग-अलग और स्पष्ट शब्दों में उच्चारण करते है। हिंदी में छोटी-छोटी कहानियाँ सुना सकता है। छात्र हिंदी में संवादो को अभिनय की शैली में बोल सकता है। छात्र प्राप्त ज्ञान और अपने अनुभवों को सरल और सामान्य हिंदी में अभिव्यक्त करता है। संख्या और अपुर्णांक की अभिव्यक्ती कर सकता हैं। ५

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के स्तर पर छात्रों को पाठ्यपुस्तक द्वारा उपर्युक्त भाषण कौशल प्राप्त होता है।

२.२.३ वाचन-

लिपि संकेतो या वर्णोका उनसे संबंध ध्वनियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया को वाचन कहा जाता है, किंतु वाचन के मूल में अर्थग्रहण की आवश्यकता भी छिपी रहती हैं। ६

छात्र पाठ्यपुस्तक द्वारा हिंदी शब्द एवं वाक्यों का मानक उच्चारण कर के वाचन करते है। छात्र अर्थ ग्रहण करके मौन वाचन करते है। नौवीं की अपेक्षा दसवीं में छात्रों की वाचन की गती बढती है। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र सुंदर आशय के ख़तों का मजनून पढ़ते हैं। आसान संवाद, कहानियाँ, निबंध, जानवरों का वर्णन आदि अर्थबोध के साथ पढ़ने के लिए प्रयत्न करते है। कविता का आशय समझकर वाचन करता है। छात्र परिच्छेद पढ़ने के बाद उसे आकलन होता है। और उनपर पूछे प्रश्नों के उत्तर देता है। जिस घटक को छात्र पढ़ता है, उसका आशय स्पष्ट करने की क्षमता उसमें निर्माण होती है।

२.२.४ लेखन-

"भाषा (मौखिक रूप) की ध्वनियों को किसी लिपि के प्रतीकात्मक चिह्नों में अंकित करना लेखन कहलाता है।" ७

छात्र पाठ्यपुस्तक द्वारा हिंदी के सभी लिपि-संकेतो और उनके बने शब्दों को सुडौल और सुपाठ्य ढंग से लिखते हैं। छात्र सामान्य वर्तमान काल, सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण भूतकाल आज्ञार्थक, प्रश्नार्थक वाक्य लेखन करते है। हिंदी में पत्र लिखते है। छात्र पाठ के आशय पर पूछे प्रश्नों पर सरल और आसान भाषा में उत्तर लिखते है। छात्र मुद्दों के आधार पर कहानी लिखते है। हिंदी का मानक लेखन करते है। हिंदी से मातृभाषा में अनुवाद करते है।

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के स्तर पर छात्रों को पाठ्यपुस्तक द्वारा उपर्युक्त भाषिक ज्ञान अवगत होता है।

२.३ कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं के स्तर पर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षा के उद्देश्य-

छात्रों को निम्न बातों के संदर्भ में क्षमता बढ़ाना-

१. मानक हिंदी उच्चारण।

२. हिंदी में आसान विषय पर संभाषण।

३. हिंदी के आसान गद्य परिच्छेद, आसान कहानियाँ, संवाद कविता अर्थबोध के साथ पढ़ना।

४. हिंदी में पत्र लिखना।

५. हिंदी व्याकरण का परिचय कराना।

६. मातृभाषा के आसान परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कराना।

७. आकलन किए हुए शब्दों के आधार पर बाल साहित्य पढ़ना।

८. सिनेमा, रेडिओ, दूरदर्शन के कार्यक्रम सुनकर एवं देखकर मनोरंजन के साथ ज्ञानार्जन करने की क्षमता बढ़ाना।

९. विविधता से युक्त भारतीय संस्कृति का स्थूल रूप से परिचय कराना एवं उनमें राष्ट्रीय भावना जागृत कराना।

१०. भारत के राष्ट्रीय जीवन में हिंदी का महत्त्व समझा देना।

२.४ कक्षा नौवीं एवं दसवीं के स्तर पर द्वितीय भाषा हिंदी अध्यापन के उद्देश्य-

१. छात्रों को हिंदी संपर्क भाषा के रूप में अपनाने में समर्थ बनाना।

२. छात्रों में राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम निर्माण करना।

३. छात्रों में हिंदी भाषा से भावात्मक एकता निर्माण करना।

४. छात्रों में हिंदी भाषा में व्यक्त किए गए विचार-सुनकर, पढ़कर आकलन करने की क्षमता निर्माण करना।

५. छात्रों में आसान हिंदी में संभाषण करने की क्षमता बढ़ाना।

६. छात्रों को अपने विचार सरल, आसान एवं मानक हिंदी में व्यक्त करने की क्षमता निर्माण

करना।

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तक से हिंदी संपर्क भाषा के रूप में छात्रों का विकास हो सकता है। राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम निर्माण होता है। राष्ट्रभाषा हिंदी की परीक्षा सुबोध, प्रवीण आदि ली जाती है। छात्र उसमें हिस्सा लेते है। हिंदी अध्यापन करने के बाद छात्रों में उद्देश्य की दृष्टि से कुछ मात्रा में सक्षमता आ जाती है।

निष्कर्ष-

हिंदी विषय पढ़ाते समय हिंदी भाषा की संरचना का उपयोग करना पडता है। संरचना से अध्यापन करना उचित है, संरचना के विभिन्न विभागों का समावेश करते हुए छात्रों को भाषा एवं आशय के दृष्टि से प्रभावित करना उचित है।

छात्रों को विभिन्न प्रकार के भाषिक कौशल पढ़ाने के लिए तथा उसका विकास करना अध्यापक का प्रमुख कर्तव्य बनता है। इसके लिए अध्यापन के उद्देश्य के अनुसार नए तंत्र का प्रयोग करते हुए पढ़ाना आवश्यक है। छात्रों का बौद्धिक, मानसिक दृष्टि से विकास होता है, भाषा प्रवाहित होती है। भाषा की नींव पाठशाला में ही पक्की करनी चाहिए, उसके लिए अध्यापक कुशलता से छात्रों का मार्गदर्शन करे।

संदर्भ

(१) स्व.डॉ.वास्कर आनंद

डॉ. श्रीमती. वास्कर पुष्पा

हिंदी आशययुक्त अध्यायन पद्धति

पृ.क्र. ५५।

(२) तद्‌ैव- पृ.क्र. ५५।

(३) डॉ. शर्मा लक्ष्मीनारायण

भाषा९, २ की शिक्षण- विधियाँ और पाठ नियोजन

प्रकाशक - विनोद पुस्तक मंदिर

रांगेय राघव मार्ग, आजरा-२

पृ. क्र. ११२।

(४) तद्‌ैव- पृ. क्र. २१९।

(५) प्रा. पंडित ब. बि.

हिंदी का अध्यापन

नूतन प्रकाशन, २२८१ सदाशिव पेठ,

पुणे ४११०३० पृ. क्र. २४।

(६) तद्‌ैव- पृ. क्र. २३।

(७) प्राथमिक शिक्षण अभ्यासक्रम १९८८

महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व

प्रशिक्षण परिषद पुणे-३०।